12/11/1966 रात्रि क्लास ओमशांति

बाप को बुलाते हैं हमको पतित से पावन बनाओ, साथ में ले जाओ। गोया मुक्ति के लिए बुलाते हैं कि आय कर हम आत्माओं को यहाँ से ले जाओ। यह रावण राज्य है; परन्तु समझते नहीं। शरीर तो सबका यहाँ खत्म होवेगा ना। इसलिए ही कहा जाता है भगवान कालों का काल है। सबको ले जाते हैं। बुलाते हैं– बाबा, इस छी–2 दुनिया से हमको ले जाओ। तुम सुखधाम–शांतिधाम जाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। बाकी सबका पुरुषार्थ है झूठा। तुम्हारा है सही। तुमको खुशी होती है हम घर जावेंगे। विचार करो, बेहद का बाप क्या कर रहे हैं। खुद कहते हैं कि कितने बेसमझ बन गए हैं। रावण ने तुम आत्माओं को बेसमझ बनाय दिया है। आत्मा बिन्दी है। इसमें 84 जन्मों का पार्ट हमेशा के लिए भरा हुआ है। कितने डीप जाते हो। आत्मा में कल्प–2 कल्पांतर के लिए पार्ट नूँधा हुआ है। यह पार्ट को बदल नहीं सकते। कोई को टोड(तोड़) नहीं सकते। बच्चे जानते हैं हम ईश्वरीय बच्चे हैं। हमको परमपिता परमात्मा पढ़ाते हैं। बेहद का बाप हैविनली गॉड फादर स्वर्ग स्थापन करने वाला है। अब समझते आए हो। बाप आए ही हैं वापिस ले जाने के लिए। बच्चे सब बुलाते हैं ओ पतित–पावन, ओ लिबरेटर आओ। जानते हो बाबा पण्डा भी है ना। पाण्डव सम्प्रदाय नाम है ना। बच्चों ने समझा है पाण्डव सेना रूहानी सेना है। रूहानी बाप द्वारा बच्चों को रूहानी ज्ञान मिलता है। शास्त्रों का ज्ञान भक्तिमार्ग का है। बनारस में अनेक प्रकार के टाइटल मिलते हैं। डॉक्टर ऑफ फिलासफी आदि। बाप को अविनाशी सर्जन कहा जाता है; क्योंकि आत्माओं को इन्जेक्शन ज्ञान का लगाते हैं। ज्ञान अंजन सत्गुरु दिया अज्ञान अंधेरा विनाश। आत्मा ही पतित तमोप्रधान बनती है। जैसे सोना वैसे ही जेवर भी बनते हैं। तुम सच्चा सोना थी, फिर अलॉय पड़ गया, दो कलाएँ कम हो गईं। अब कोई भी कलाएँ नहीं रही हैं। फिर सबकी चढ़ती कला होती है। वो है ही भक्तिमार्ग। कोई सद्गति देने वाला गुरु भक्तिमार्ग में होता नहीं है। बीच में कोई वापिस जाय नहीं सकते। धर्म स्थापक सब तमोप्रधान हैं। फिर सब अपने–2 सेक्शन में चले जावेंगे। बहुत कहते हैं हमको मन की शान्ति चाहिए। शान्ति तो होती है मुक्तिधाम में। समझते है सुख कागविष्ठा समान है; इसलिए सुख नहीं चाहिए। सतयुग के सुख का उनको पता ही नहीं है। शास्त्रों में दंत कथाएँ लिख दी हैं। कंस–जरासंधी–शिशुपाल सतयुग में थे; परन्तु यह सब ही अब के ही हैं। भागवत संगम का है। बाबा अब बहुत समझदार बनाते हैं। पत्थर से पारस बुद्धि बनाते हैं। अब तुम राजयोग सीख रहे हो। सन्यासियों का हठयोग है। योगी पवित्र रहते हैं। तुम्हारी है ही माया से लड़ाई। माया जीते जगत जीत बनना है। माया से हारे हार है। मेहनत सारी याद में है। बाप कहते हैं मैं तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ। तुम मुझे याद नहीं कर सकते हो। याद ही है मुख्य। उठते–बैठते याद में ही रहना है। सवेरे का समय बहुत ही अच्छा है। 21 जन्मों के लिए एवरहेल्दी, वेल्दी बनते हो तो कुछ तो मेहनत भी करनी पड़े ना। यह है ही सहज राजयोग और सहज ज्ञान। अब तुम्हारी बुद्धि सारी खुल गई है। अब तुम ज्ञान–ज्ञानेश्वरी हो। फिर बनोगे राज–राजेश्वर। तो पुरुषार्थ करके अपना ऊँच पद लेना चाहिए। ऐसे नहीं कि चलो प्रजा ही सही। बाप कहेंगे कि बजारे(बिचारे) हैं। अब फेल हुए तो कल्प–2 होंगे। ओम।